

"प्रेमचंद के उपन्यासों में शोषित नारी"

डॉ. नरेश कुमार
व्याख्याता, हिंदी
राजकीय महाविद्यालय
कालाडैरा (जयपुर)

1. प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का स्थान एक युग प्रवर्तक लेखक के रूप में स्थापित है। उन्होंने समाज के उपेक्षित, शोषित और वंचित वर्गों को अपनी लेखनी का केंद्र बनाया, जिनमें नारी की स्थिति एक प्रमुख विषय रहा है। प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी पात्र केवल सहानुभूति की पात्र नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का प्रतीक बनकर उभरती हैं।

उनकी रचनाओं में नारी जीवन के विभिन्न पक्षों को अत्यंत संवेदनशीलता और यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया गया है। वे नारी को केवल प्रेम या सौंदर्य के प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि उसकी सामाजिक, आर्थिक और मानसिक पीड़ाओं के साथ चित्रित करते हैं। गोदान, सेवासदन, निर्मला आदि उपन्यासों में शोषित नारी की विवशता, संघर्ष, अस्मिता और आत्मबल का यथार्थ चित्रण किया गया है।

यह शोध पत्र प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित शोषित नारी की स्थिति, उनके संघर्ष, सामाजिक दृष्टिकोण और लेखकीय दृष्टि का विश्लेषण करने का प्रयास करेगा। साथ ही यह भी देखा जाएगा कि प्रेमचंद की नारी पात्र किस हद तक सामाजिक बदलाव की वाहक बनती हैं और उनके माध्यम से लेखक ने समाज को क्या संदेश देने का प्रयास किया है। प्रेमचंद के साहित्य में शोषित नारी न केवल करुणा की पात्र है, बल्कि वह चेतना और परिवर्तन की वाहक भी है। उनका साहित्य नारी विमर्श की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

2. प्रेमचंद के युग की सामाजिक पृष्ठभूमि व

भारतीय समाज में नारी की स्थिति (19वीं – 20वीं सदी)

19वीं और 20वीं सदी का कालखंड भारतीय समाज में सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवर्तन का समय था। इस युग में नारी की स्थिति अत्यंत जटिल और बहुआयामी रही। एक ओर जहाँ वह पारंपरिक रूढ़ियों, पितृसत्तात्मक व्यवस्था और सामाजिक शोषण की शिकार थी, वहीं दूसरी ओर सामाजिक सुधार आंदोलनों और शिक्षा के प्रसार ने नारी चेतना को नया आयाम भी दिया।

19वीं सदी में अधिकांश महिलाएँ अशिक्षित थीं और सामाजिक बंधनों में जकड़ी हुई थीं। बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, विधवा जीवन की कठोरता और संपत्ति के अधिकार से वंचित रहना — ये सभी उस समय की सामान्य स्थितियाँ थीं। नारी का जीवन पुरुष पर पूर्णतः निर्भर था और उसे घरेलू कार्यों तक सीमित रखा गया था।

हालाँकि इस युग में राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले जैसे समाज सुधारकों ने नारी उत्थान के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। सती प्रथा का उन्मूलन, विधवा पुनर्विवाह की अनुमति, और महिला शिक्षा की शुरुआत इसी काल में हुई।

20वीं सदी में स्वाधीनता आंदोलन के प्रभाव से नारी की भूमिका में व्यापक परिवर्तन आने लगे। महात्मा गांधी, पंडिता रमाबाई, सरोजिनी नायडू, और कस्तूरबा गांधी जैसी महिलाओं ने सार्वजनिक जीवन में भाग लेना शुरू किया। इस काल में महिलाएँ राजनीतिक, सामाजिक और शैक्षिक आंदोलनों का हिस्सा बनीं, जिससे उनमें आत्मविश्वास और जागरूकता का विकास हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान ने स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्रदान किए — जैसे समानता का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, संपत्ति में अधिकार आदि। इसके बावजूद, समाज में नारी के प्रति भेदभाव और शोषण की प्रवृत्तियाँ पूरी तरह समाप्त नहीं हुईं।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि

19वीं और 20वीं सदी के मध्यकाल में भारतीय नारी ने एक लंबी यात्रा तय की — पारंपरिक बेड़ियों से निकलकर आत्मनिर्भरता और सामाजिक चेतना की ओर। इस काल की नारी-स्थिति को समझना न केवल सामाजिक इतिहास को समझने के लिए आवश्यक है,

बल्कि यह आज की नारी की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए भी महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है।

3. प्रेमचंद की नारी विषयक दृष्टि:-

नारी के प्रति लेखक की सहानुभूति और संवेदना

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के उन महान कथाकारों में से हैं जिन्होंने समाज के उपेक्षित, पीड़ित और शोषित वर्गों की गहरी संवेदना के साथ चित्रण किया। विशेषकर नारी जीवन के विविध पक्षों को उन्होंने बड़ी सहानुभूति और सजीवता से प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में नारी केवल करुणा की पात्र नहीं, बल्कि संघर्षशील, आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है।

प्रेमचंद ने नारी की दयनीय सामाजिक स्थिति, उसकी दुर्दशा और शोषण को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने नारी को केवल सौंदर्य या प्रेम की मूर्ति के रूप में नहीं, बल्कि उसकी संघर्षशीलता, त्याग, और आत्मबल को उजागर किया। चाहे 'निर्मला' उपन्यास की बालविवाह का शिकार लड़की हो या 'गबन' की विमला, प्रेमचंद ने नारी को उसकी समग्रता में चित्रित किया।

प्रेमचंद की नारी पात्रों केवल सहनशील नहीं, बल्कि समय आने पर विद्रोह भी करती हैं। उदाहरण के लिए, 'सेवासदन' की सुमन जब समाज की विडंबनाओं से जूझती है, तो वह अंततः अपना रास्ता स्वयं चुनती है। प्रेमचंद नारी को पुरुष पर आश्रित नहीं दिखाते, बल्कि उसे अपने अस्तित्व की लड़ाई स्वयं लड़ने वाली के रूप में चित्रित करते हैं।

प्रेमचंद की लेखनी में नारी पात्रों के प्रति सहानुभूति है, परंतु यह सहानुभूति दया या हीन दृष्टि में परिवर्तित नहीं होती। उन्होंने नारी की समस्याओं को केवल भावनात्मक दृष्टिकोण से नहीं देखा, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक कारणों को उजागर किया।

प्रेमचंद के लेखन में नारी मुक्ति का विचार स्पष्ट रूप से झलकता है। वे नारी को शिक्षा, समान अधिकार और स्वतंत्र सोच का समर्थन करते हैं। उनके अनुसार नारी को भी समाज में वही स्थान मिलना चाहिए जो पुरुष को प्राप्त है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में वर्णित शोषण के विविध रूप – पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और लैंगिक है जिसे इस पत्र में समीक्षात्मक व संक्षिप्त रूप में वर्णित कर रहा हूँ।

प्रेमचंद के उपन्यास भारतीय समाज के यथार्थ का दर्पण हैं। उन्होंने अपने लेखन में समाज के निम्नवर्ग, किसानों, स्त्रियों, दलितों और मजदूरों की समस्याओं को प्रमुखता दी। उनके उपन्यासों में शोषण के विविध रूपों का व्यापक चित्रण मिलता है – चाहे वह पारिवारिक हो, सामाजिक, आर्थिक या लैंगिक।

प्रेमचंद के उपन्यासों में पारिवारिक शोषण विशेष रूप से स्त्रियों और बुजुर्गों पर केंद्रित है।

'निर्मला' उपन्यास में एक किशोरी का विवाह एक वृद्ध पुरुष से कर दिया जाता है, जिससे उसका मानसिक और भावनात्मक शोषण होता है।

'गोदान' में होरी का परिवार आपसी कलह, संदेह और स्वार्थ के चलते टूटता है। उसकी पत्नी धनिया पर भी पारिवारिक जिम्मेदारियों का बोझ है और समाज के अन्याय के खिलाफ वह संघर्ष करती है।

प्रेमचंद ने समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव, धार्मिक रूढ़ियाँ और सामाजिक असमानताओं का गहराई से चित्रण किया है।

'रंगभूमि' में सुजाता एक अंधे भिखारी सूरदास के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ खड़ी होती है, जहाँ समाज की ताकतवर शक्तियाँ निर्धनों को कुचलने का प्रयास करती हैं।

'गोदान' में दलित पात्र सिलिया का सामाजिक बहिष्कार होता है, और उसका जीवन केवल शोषण और उपेक्षा का प्रतीक बन जाता है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में किसान, मजदूर और निम्न वर्ग का आर्थिक शोषण एक प्रमुख विषय है।

'गोदान' में होरी जैसे किसान कर्ज, ज़मींदारों और महाजनों के अत्याचारों के शिकार होते हैं। वह दिन-रात मेहनत करता है, फिर भी उसका पेट नहीं भरता और अंततः वह कर्ज में डूबकर मर जाता है।

'कर्मभूमि' में श्रमिकों और कारीगरों की दयनीय स्थिति का वर्णन है, जहाँ पूंजीपति वर्ग उनका लगातार शोषण करता है।

प्रेमचंद ने स्त्रियों के साथ होने वाले लैंगिक भेदभाव और शोषण का सशक्त चित्रण किया है।

'सेवासदन' में सुमन का चरित्र सामाजिक और लैंगिक शोषण की शिकार स्त्री का उदाहरण है, जिसे नैतिकता की कसौटी पर कसकर

तिरस्कृत किया जाता है।

‘निर्मला’ में पुरुष वर्चस्व के चलते एक लड़की की इच्छाओं और अधिकारों की बलि दे दी जाती है।

स्त्रियाँ शिक्षा, संपत्ति और स्वतंत्रता के अधिकार से वंचित रहती हैं, जिसे प्रेमचंद ने आलोचनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत किया।

सार रूप में यही कहा जा सकता है कि

प्रेमचंद के उपन्यास शोषण के विविध रूपों को उजागर करते हैं। वे न केवल समस्याओं की पहचान करते हैं, बल्कि उनके समाधान की दिशा में समाज को सोचने के लिए भी प्रेरित करते हैं। उनकी लेखनी में यथार्थ, करुणा और सुधार की भावना का सुंदर समन्वय है।

प्रेमचंद द्वारा अपने उपन्यासों में नारी को ‘सहनशील’ नहीं बल्कि ‘संघर्षशील’ के रूप में चित्रित करना एक चमत्कारी विचार रहा है। प्रेमचंद हिंदी साहित्य के यथार्थवादी और समाज-सुधारक लेखक थे। उन्होंने नारी की केवल दयनीय स्थिति या सहनशीलता का चित्रण नहीं किया, बल्कि उसे एक जागरूक, आत्मनिर्भर और संघर्षशील रूप में प्रस्तुत किया। उनके उपन्यासों की नारी पात्रों सामाजिक बंधनों को चुनौती देती हैं, अन्याय के विरुद्ध खड़ी होती हैं और अपने अस्तित्व की रक्षा करती हैं।

प्रेमचंद द्वारा अपने साहित्य में नारी की संघर्षशीलता का यथार्थ चित्रण किया गया है

प्रेमचंद ने नारी को परंपरागत सीमाओं में कैद अबला नहीं दिखाया, बल्कि समय आने पर अन्याय के विरुद्ध खड़ी होने वाली सशक्त स्त्री के रूप में चित्रित किया।

‘सेवासदन’ की सुमन वेश्या बनने के बाद आत्मग्लानि से घिरकर समाज-सेवा के माध्यम से अपनी पहचान बनाती है। वह समाज के कठोर नियमों के खिलाफ संघर्ष करती है।

‘निर्मला’ की नायिका मानसिक पीड़ा झेलने के बावजूद अंत तक संयम और आत्मबल का परिचय देती है।

प्रेमचंद की नारी केवल सहन करती नहीं, वह निर्णय भी लेती है।

‘गबन’ की विमला जब अपने पति के गलत मार्ग पर चलने की बात जानती है, तो वह उससे अलग होकर आत्मसम्मान से जीवन जीने का निश्चय करती है।

‘गोदान’ की धनिया एक सशक्त ग्रामीण स्त्री है जो अपने पति होरी की कमजोरियों को ढँककर परिवार को संभालती है। वह समाज के अन्याय और कुरीतियों का डटकर सामना करती है।

प्रेमचंद की नारी पात्रों का संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना से प्रेरित होता है। वे अपने अस्तित्व और अधिकार के लिए लड़ती हैं, पुरुषसत्ता के वर्चस्व को चुनौती देती हैं।

उनकी नायिकाएँ केवल प्रेम या परिवार के लिए नहीं, बल्कि समाज में अपने लिए स्थान और सम्मान पाने के लिए संघर्ष करती हैं।

प्रेमचंद की नारियाँ समाज में बदलाव की वाहक हैं। वे रूढ़ियों को तोड़ने वाली और नई सोच को जन्म देने वाली होती हैं। उनका संघर्ष समाज में जागृति लाने वाला है।

निष्कर्षतः

प्रेमचंद की नारी सहनशीलता की मूर्ति नहीं, बल्कि संघर्षशील चेतना का प्रतीक है। उन्होंने नारी के आत्मसम्मान, स्वाभिमान और स्वतंत्र अस्तित्व को प्राथमिकता दी। प्रेमचंद का यह दृष्टिकोण उनके समय से बहुत आगे था, जो आज भी प्रासंगिक है।

4 अन्य समकालीन साहित्यकारों की तुलना में प्रेमचंद की विशेषताएँ:-

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के उस युग के लेखक थे जब समाज में महिलाओं की स्थिति अत्यंत शोचनीय थी। उस दौर के अनेक साहित्यकारों ने नारी का चित्रण किया, परंतु प्रेमचंद की नारी-चेतना उन्हें अपने समकालीनों से विशिष्ट और अग्रणी बनाती है। उन्होंने नारी को केवल शोषित और अबला रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील, विचारशील और आत्मसम्माननी रूप में प्रस्तुत किया।

जहाँ अधिकांश समकालीन लेखक नारी को कोमल भावनाओं की मूर्ति, त्याग की देवी या पुरुष की प्रेरणा के रूप में चित्रित करते थे, वहीं प्रेमचंद ने उसे सामाजिक यथार्थ के धरातल पर चित्रित किया।

वे नारी के दुख को केवल सौंदर्य या करुणा के माध्यम से नहीं, बल्कि समाजशास्त्रीय और मानवीय दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने घरेलू, आर्थिक, सामाजिक और मानसिक शोषण के विविध रूपों को गहराई से समझा और व्यक्त किया। जहाँ अन्य लेखक नारी की सहनशीलता को महिमामंडित करते हैं, प्रेमचंद ने उसे संघर्षशील और परिवर्तन की वाहक के रूप में प्रस्तुत किया।

धनिया (गोदान), सुमन (सेवासदन), विमला (गबन) जैसी पात्रें अन्याय के विरुद्ध खड़ी होती हैं और सामाजिक सोच को चुनौती देती हैं।

ये स्त्रियाँ केवल पीड़ित नहीं, बल्कि अपनी पीड़ा के खिलाफ कदम उठाने वाली हैं

प्रेमचंद की नारी पात्रें केवल कथानक का हिस्सा नहीं होतीं, वे सामाजिक सुधार का माध्यम बनती हैं।

वे बालविवाह, दहेज प्रथा, विधवा जीवन, स्त्री शिक्षा, और लैंगिक असमानता जैसे मुद्दों को उठाते हैं, जबकि अन्य समकालीन लेखक इन विषयों से प्रायः कतराते हैं या सतही दृष्टिकोण अपनाते हैं।

प्रेमचंद ने नारी के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को भी गहराई से उकेरा। उन्होंने स्त्रियों की भावनाओं, द्वंद्वों और आत्मसम्मान को गंभीरता से समझा और लिखा, जो उस समय की साहित्यिक परंपरा में अपेक्षाकृत दुर्लभ था।

जहाँ अधिकांश लेखक नारी को परंपराओं के भीतर सीमित रखते थे, प्रेमचंद ने नारी को उन बंधनों से बाहर निकालने की कोशिश की। उन्होंने उसे स्वतंत्र विचार, शिक्षा, और अधिकारों की जरूरत का प्रतीक बनाया।

निष्कर्ष रूप में यह स्पष्ट हो गया है कि

प्रेमचंद की शोषित नारी विषयक दृष्टि अन्य समकालीन साहित्यकारों की तुलना में कहीं अधिक गंभीर, संपूर्ण और सुधारवादी है। उन्होंने नारी को साहित्य में न केवल स्थान दिया, बल्कि उसे सम्मान और सामाजिक भूमिका भी प्रदान की। इसी कारण प्रेमचंद की नारी-चेतना आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायी मानी जाती है।

5. निष्कर्ष

प्रेमचंद द्वारा शोषित नारी के चित्रण की सामाजिक प्रासंगिकता एवं वर्तमान समाज के लिए संदेश:-

प्रेमचंद का साहित्य न केवल उनके समय का दस्तावेज है, बल्कि वह आज के समाज के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है। आज भी, ग्रामीण क्षेत्रों में बालविवाह, स्त्री शिक्षा की कमी, और घरेलू शोषण जैसी समस्याएँ मौजूद हैं।

प्रेमचंद के उपन्यासों में यह स्पष्ट संदेश है कि स्त्री की मुक्ति केवल कानून से नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और मानसिक परिवर्तन से संभव है।

आज के आधुनिक समाज में भी लैंगिक असमानता, कार्यस्थल पर भेदभाव और यौन शोषण जैसी समस्याएँ व्याप्त हैं। प्रेमचंद की रचनाएँ बताती हैं कि स्त्री को भी बराबरी का स्थान मिलना चाहिए।

प्रेमचंद ने बार-बार इस बात पर ज़ोर दिया कि स्त्री को शिक्षित और आत्मनिर्भर होना चाहिए।

यह आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जब लड़कियाँ शिक्षा, करियर और निर्णय-निर्माण में अपनी भूमिका निभा रही हैं।

प्रेमचंद द्वारा चित्रित शोषित नारी की कथा केवल अतीत की कहानी नहीं है, वह आज के समाज का दर्पण और दिशा-सूचक भी है। उनकी रचनाएँ नारी के संघर्ष, आत्मबल और सम्मान की महत्ता को रेखांकित करती हैं।

वर्तमान समाज के लिए उनका स्पष्ट संदेश है कि नारी को केवल सहनशीलता की मूर्ति नहीं, बल्कि समान अधिकारों, सम्मान और स्वतंत्र अस्तित्व के साथ देखने की आवश्यकता है।

प्रमुख संदर्भ ग्रंथ और स्रोत:-

प्रेमचंद के मूल उपन्यास

सेवासदन – वेश्यावृत्ति और स्त्री गरिमा का द्वंद्व

निर्मला – बाल विवाह और स्त्री की पारिवारिक शोषण कथा

गोदान – ग्रामीण स्त्री (धनिया, झुनिया) की सामाजिक स्थिति
प्रेमाश्रम, रंगभूमि – स्त्रियों की सामाजिक चेतना और संघर्ष
प्रेमचंद का यथार्थवाद – डॉ. नामवर सिंह
प्रेमचंद और हिंदी उपन्यास – डॉ. रामविलास शर्मा
प्रेमचंद: जीवन और साहित्य – डॉ. अमृतराय
प्रेमचंद का नारी विमर्श – डॉ. सुशीला टाकभौरे
प्रेमचंद और स्त्री चेतना – डॉ. कुसुम सक्सेना
हिंदी उपन्यास और नारी विमर्श – डॉ. प्रतिभा अग्रवाल
नारी और प्रेमचंद – डॉ. महेश चंद्र वर्मा
स्त्री: एक विमर्श – डॉ. रमणिका गुप्ता
नारीवाद की यात्रा – कमला भसीन
हिंदी साहित्य में नारी विमर्श – डॉ. रेखा सेठ